वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 148
ISBN 978-93-80353-56-2

गणधरवलय विधान

–रचयित्री–

जम्बूद्वीप रचना की पावन प्रेरिका
युगप्रवर्तिका गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

भगवान शांतिनाथ जन्म, दीक्षा व निर्वाणकल्याणक दिवस–ज्येष्ठ कृ. चतुर्दशी, 11 जून 2010 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित ''प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर वर्ष'' के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र. फ़ोन नं.- (01233) 280184, 292943
Website : www.jambudweep.org
E-mail : ravindrajain@jambudweep.org

COURTESY–JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

तृतीय संस्करण | **आश्विन शु. पूर्णिमा, वी.नि.सं. 2536** | **मूल्य**
2200 प्रतियाँ | **22 अक्टूबर 2010, शरदपूर्णिमा** | **20/-रु.**

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण, सन् 1999–5000 प्रतियाँ
द्वितीय संस्करण, सन् 2008–2200 प्रतियाँ

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

परम पूज्य गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से सन् 1972 में दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अंतर्गत ''वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला'' की स्थापना हुई थी।

इस ग्रंथमाला के द्वारा इन वर्षों में लगभग 300 ग्रंथों का लाखों की संख्या में प्रकाशन हो चुका है। वर्तमान युग की पुकार को सुनकर पूज्य माताजी ने बालक, युवा, वृद्ध तथा विद्वानों के लिए उपयोगी पुस्तकें लिखकर अपना कीर्तिमान स्थापित किया है। जिसमें अनेक विधानों की भी रचना की है। माताजी की कलम को विश्राम नहीं मिलता है यदि ग्रंथ सृजन कुछ समय के लिए रुक जाता है तो उन्हें ऐसा प्रतीत होता है मानो उपवास हो। वे अपनी लेखनी को आत्मा की खुराक समझतीं हैं जिससे शारीरिक अस्वस्थता में भी माताजी प्रसन्न एवं स्वस्थ नजर आती हैं। जैसे भोजन के बिना शारीरिक शिथिलता आती है उसी प्रकार माताजी को भी लेखन के अभाव में शिथिलता का अनुभव होता है।

साहित्य सृजन की इस श्रृंखला में 'गणधरवलय विधान' पुस्तक आप लोगों के समक्ष आ रही है। इसमें गणधर गुरुओं की महिमा का वर्णन किया गया है।

जहाँ पू. गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा लिखे गये कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, इंद्रध्वज आदि बड़े-बड़े विधानों की सारे देश में धूम मची हुई है वहीं शांति विधान, नंदीश्वर विधान, ऋषिमण्डल विधान आदि लघु विधान प्रत्येक मांगलिक अवसरों पर किये जाते देखे जाते हैं। यह पू. माताजी का सारे विश्व पर बहुत बड़ा उपकार है।

हमें आशा है कि समस्त धर्मनिष्ठ श्रावक-श्राविकाएँ जिस प्रकार से इन पाठों को करते हुए भक्ति में तन्मय हो अपनी कर्मकालिमा को धो लेते हैं उसी प्रकार इस विधान द्वारा भी गणधर गुरुओं का गुणानुवाद करते हुए इस विधान पुस्तक से पूरा-पूरा लाभ उठायेंगे। पू. माताजी दीर्घायु हों एवं उनका श्रम हम सबके लिए लाभप्रद हो यही भगवान जिनेन्द्र से प्रार्थना है।

प्रस्तावना

-ब्र.कु.इन्दू जैन (संघस्थ)

तीर्थंकर की ध्वनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई,
सो जिनवर वाणी, शिवसुखदानी, त्रिभुवनमानी पूज्य भई।।

वास्तव में देखा जाए तो तीर्थंकर प्रभु की वाणी को जन-जन तक पहुँचाने वाले ये गणधर देव ही हैं। युगादिब्रह्मा, प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के 84 गणधर हुए हैं तथा 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर के 11 गणधर। उन गणधर प्रभु की अर्चना कर हम भी अपनी कर्मकालिमा को धोकर स्वयं में आत्मज्योति को प्रस्फुटित कर सकते हैं।

शताधिक ग्रंथों की रचयित्री पू. गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की साहित्यिक लेखनी ने जहाँ एक ओर इंद्रध्वज विधान, कल्पद्रुम विधान, सर्वतोभद्र विधान आदि बड़े-बड़े विधानों की रचना कर दी वहीं शांतिनाथ विधान, नंदीश्वर विधान आदि लघु विधानों की रचना कर साधारण भक्तों को भी भक्तिमार्ग में प्रवृत्त कर दिया क्योंकि आज व्यक्ति भौतिकता की चकाचौंध में पड़कर अपने षटावश्यक कर्तव्यों को भूलता जा रहा है किन्तु आत्मशांति को खोज में अवश्य तत्पर रहता है। उसकी यह तत्परता जब इन विधानों की ओर केन्द्रित होती है तो वह एक विशेष प्रकार की सुखानुभूति करता है।

पूज्य माताजी ने इन विधानों की रचना कर जनमानस पर जो उपकार किया है वह युगों-युगों तक चिरस्मरणीय रहेगा। उन्हीं विधानों की श्रृंखला में भक्तों की भक्ति को वृद्धिंगत करती प्रस्तुत विधान रचना ''गणधरवलय विधान'' भी एक अनूठी कृति है जिसमें उन्होंने गणधर गुरुओं का गुणानुवाद करते हुए कहा है–

गणधर के गुणों को गाते चलो, मनवांछित फल पा जावोगे।
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाते चलो, धन सुख संपदा पा जाओगे।।

सर्वप्रथम इसमें गणधरवलय यंत्र की अभिषेक विधि बतलाकर तत्पश्चात् गणधर वलय के 48 मंत्रों के माध्यम से 48 ऋद्धियों को नमन किया है। गणधरों को नमन करते हुए उन्होंने इन पंक्तियों में कहा–

नमन है सर्व गणधर को, जिन्होंने कर्म अरि नाशे।
नमन उन ऋद्धियों को भी, जिन्होंसे आत्मगुण भासे।।

मानव तन की अनमोलता बताते हुए एक स्थान पर विक्रिया ऋद्धि युक्त ऋषियों का अतीव आकर्षक एवं हृदयस्पर्शी चित्रण किया है–

यह मानव तन, अनमोल रतन, पा विषयों में मत फंस जाना।
भवसिंधु अगर तरना चाहो, जिनचरण शरण में आ जाना।।
अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ती प्रकाम्य ईशित्व वशी।
अप्रतीघात अंतर्ध्यानी, विक्रिया कामरूपी आदी।।
विक्रिया ऋद्धि गुरु को पूजो, तुम इनका वंदन कर जाना।।यह.।।

इस प्रकार क्रम-क्रम से 48 ऋद्धियों को नमन करते हुए उनकी प्राप्ति का उपाय बताया है। सचमुच में इस विधान को करते-करते ऐसी अनुभूति होती है कि प्रभु! मैं यावज्जीवन आपकी इसी प्रकार भक्ति करते हुए अपने पापपुंजों को पूर्णरूपेण नष्ट कर पूर्ण आत्मविशुद्धि को प्राप्त कर लूँ।

भक्ति में शक्ति होती है, यह प्रत्यक्षानुभूत बात है। जो भव्यजन गुरुभक्तिपूर्वक इस–''गणधरवलय विधान'' को करते हैं उनके रोग, शोक, दरिद्रता, मानसिक पीड़ा आदि सभी संकट दूर हो जाते हैं तथा दीर्घायु, उत्तम स्वास्थ्य, सुकीर्ति, वैभव, संपत्ति आदि सभी मनोवाञ्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं। भले ही आज पंचम-काल में वे ऋद्धियाँ नहीं हैं फिर भी उन गणधरों की भक्ति का फल तो मिलता ही है। प्रतिक्रमण ग्रंथत्रयी में लिखा है कि ये 48 गणधरवलय मंत्र श्री गौतमस्वामी के मुख से निकले है। तो ऐसे साक्षात् गौतमस्वामी के श्रीमुख से निःसृत 48 गणधरवलय मंत्रों से संयुत इस गणधरवलय विधान में उन 48 ऋद्धियों के धारी गणधर गुरुओं की गुणार्चना कर प्रभु भक्ति में तन्मय करने वाली भक्तिप्रेरक धुनों से युक्त इस गणधरवलय पूजन को करके आप भी तीर्थंकर प्रभु के गणधरों की महिमा का गुणानुवाद कृत, कारित, अनुमोदना-पूर्वक करके पूर्ण आत्मिक शांति को प्राप्त करें तथा एक दिन साक्षात् समवसरण में पहुँचकर ऐसी महानतम ऋद्धियों से युक्त गणधर पदवी को प्राप्त करने की भावना कर मानव पर्याय को सफल करें यही मंगल भावना है।

विधान की रचयित्री, परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991(सन् 1934)

गृहस्थ का नाम–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में।

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा– भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (जिला गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा निर्माण की प्रेरणा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं–

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है– कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन कियेजाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तकआने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खी बावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कॉट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
19. श्री जितेन्द्र कुमार सुनीता कोटड़िया, फ्लोरिडा (यू.एस.ए.)

नवदेवता पूजन

–गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

–गीता छन्द –

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालय-समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालय-समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालय-समूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक –

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नवसु चढ़ायके।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।**
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

***जाप्य –*ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

सोरठा – **चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।**
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।1।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति.....)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।2।।
आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।

जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।3।।
जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।4।।
जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।5।।
जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।6।।
नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।7।।

दोहा – **नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।**
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

*गीता छंद –***जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।**
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।9।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

गणधरवलय अभिषेक विधि

अथ यन्त्रोद्धारः (यन्त्रलेखनमित्यर्थः)

–अनुष्टुप्–

षट्कोणचक्रमध्ये तु, क्षमामधः श्रीं च मस्तके।
अर्हं झ्वीं ह्रीं लिखेत्पार्श्वे, दक्षिणे वामतः क्रमात्।।1।।

श्रीदक्षिण सप्रणवाऽसि, आ उ सा सहोमकम्।
कोणेष्वप्रतिचक्रे फट्, सव्येन स्थापयेत् क्रमात्।।2।।

कोणान्तरे विचक्राय, स्वाहा षड् बीजमालिखेत्।
कोणाग्रेषु लिखेत् श्रीह्री-धृतिकीर्तिमतीन्दिराः।।3।।

वसु द्व्यष्ट त्रिहाष्टेषु, पत्रेषु ऋद्धिमन्त्रकान्।
लिखित्वा मायया वेष्ट्य, क्रों रुद्धं गणधारकम्।।4।।

यन्त्रं भूमण्डलोपेतं, लिखित्वा स्थापयेत् सुधीः।
स्वर्णे रुप्येऽथवा ताम्रे, भूर्जे संसिद्धिकारकम्।।5।।

इति यन्त्रोद्धारः

गणधरवलय यंत्र का अभिषेक

अथ गणधरवलययन्त्रस्नपनम्

नत्वा सिद्धं विशुद्धेद्धं, चिन्मात्रं लोकमूर्धगम्।
तदग्रे स्थापये कुम्भं, वारिपूरं हिरण्यजम्।।1।।

इति कलशस्थापनम्

गंगादिवरपानीयै-र्हिमचन्दनशीतलैः।
शुद्धात्मपदमारूढं, स्नपयामि गणेशिनम्।।2।।

ॐ ह्रीं नमो भगवते गणधरवलयाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः गंगादितीर्थपवित्रतरजलेन स्नपयामि स्वाहा।

इति तीर्थोदकाभिषेकः

–आर्या–

वनगन्धाक्षतपुष्पै-र्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः।
चाये गणधरवलयं, कर्माष्टकभावनिर्मुक्त्यै।।3।।

ॐ ह्रीं गणधरवलयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–अनुष्टुप्–

पुण्ड्रेक्षुनालिकेरादि-रसै रम्यैः शुभावहैः।
शुद्धात्मपदमारूढं, स्नपयामि गणेशिनम्।।4।।

ॐ ह्रीं नमो भगवते गणधरवलयाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः पवित्रतरेक्ष्वादिरसेन स्नपयामि स्वाहा।

–इतीक्ष्वादिरसाभिषेकः–

वनगन्धाक्षतपुष्पै-र्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः।
चाये गणधरवलयं, कर्माष्टकभावनिर्मुक्त्यै।।

ॐ ह्रीं गणधरवलयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वांगपुष्टिदै रम्यै, राज्यैर्घ्राणादिसत्प्रियैः।
शुद्धात्मपदमारूढं, स्नपयामि गणेशिनम्।।5।।

ॐ ह्रीं नमो भगवते गणधरवलयाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः पवित्रतरघृतेन स्नपयामि स्वाहा।

–इति घृताभिषेकः–

वनगन्धाक्षतपुष्पै-र्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः।
चाये गणधरवलयं, कर्माष्टकभावनिर्मुक्त्यै।।

ॐ ह्रीं गणधरवलयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ्रैः स्निग्धैर्वरक्षीरैः, शुक्लध्यानोज्ज्वलैः परैः।
शुद्धात्मपदमारूढं, स्नपयामि गणेशिनम्।।6।।

ॐ ह्रीं नमो भगवते गणधरवलयाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रौं ह्रौं नमः पवित्रतरदुग्धेन स्नपयामि स्वाहा।

–इति दुग्धाभिषेकः–

वनगन्धाक्षतपुष्पै-र्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः।
चाये गणधरवलयं, कर्माष्टकभावनिर्मुक्त्यै।।

ॐ ह्रीं गणधरवलयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्यपिण्डैरिवाखण्डैः, स्थिरैर्दधिभिरुत्प्रभैः।
शुद्धात्मपदमारूढं, स्नपयामि गणेशिनम्।।7।।

ॐ ह्रीं नमो भगवते गणधरवलयाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रौं ह्रौं नमः पवित्रतरदध्ना स्नपयामि स्वाहा।

–इति दध्यभिषेकः–

वनगन्धाक्षतपुष्पै-र्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः।
चाये गणधरवलयं, कर्माष्टकभावनिर्मुक्त्यै।।

ॐ ह्रीं गणधरवलयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लवंगेलासुकर्पूरचूर्णैः पूर्णैः सुगन्धिभिः।
उद्वर्तयामि सद्भक्त्या, गणेशं कर्महानये।।8।।

ॐ ह्रीं नमो भगवते गणधरवलयाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रौं ह्रौं नमः पवित्रतरसर्वौषधिभिः स्नपयामि स्वाहा।

–इति सर्वौषधिस्नपनं–

वनगन्धाक्षतपुष्पै-र्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः।
चाये गणधरवलयं, कर्माष्टकभावनिर्मुक्त्यै।।

ॐ ह्रीं गणधरवलयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्वर्गैरिवोद्भूतैश्चतुष्ककलशामृतैः।
शुद्धात्मपदमारूढं, स्नपयामि गणेशिनम्।।9।।

ॐ ह्रीं नमो भगवते गणधरवलयाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रौं ह्रौं नमः पवित्रतरचतुष्कलशैः स्नपयामि स्वाहा।

–इति चतुष्कलशस्नपनम्–

वनगन्धाक्षतपुष्पै-र्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः।
चाये गणधरवलयं, कर्माष्टकभावनिर्मुक्त्यै।।

ॐ ह्रीं गणधरवलयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूरचन्दनद्रव्य-व्यक्तैर्गन्धोदकैः शुभैः।
शुद्धात्मपदमारूढं, स्नपयामि गणेशिनम्।।10।।

ॐ ह्रीं नमो भगवते गणधरवलयाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रौं ह्रौं नमः पवित्रतरगन्धोदकेन स्नपयामि स्वाहा।

–इति गन्धोदकाभिषेकः–

वनगन्धाक्षतपुष्पै-र्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः।
चाये गणधरवलयं, कर्माष्टकभावनिर्मुक्त्यै।।

ॐ ह्रीं गणधरवलयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यदंगसंगितोयेन, याति पापं नृणां क्षणात्।
तदर्पये निजे मूर्ध्न्यघं तिष्ठति कथं मम।।11।।

–इति गंधोदकवन्दनम्–

स्नपयित्वेति ये भक्त्या, चायन्ते गणनायकम्।
भुक्त्वा स्वर्भूपदं मुक्तौ, सुखायन्ते सुखैषिणः।।12।।
इति पुष्पांजलिः।

।।इति श्रीगणधरवलययन्त्रस्नपनं समाप्तम्।।

गणधर वलय विधान

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

–गणधर वलय मंत्र–

णमो जिणाणं । णमो ओहिजिणाणं।।
णमो परमोहिजिणाणं। णमो सव्वोहिजिणाणं।।
णमो अणंतोहिजिणाणं। णमो कोट्ठबुद्धीणं।।
णमो बीजबुद्धीणं। णमो पादाणुसारीणं।।
णमो संभिण्णसोदाराणं। णमो सयंबुद्धाणं।।
णमो पत्तेयबुद्धाणं। णमो बोहिय बुद्धाणं।
णमो उजुमदीणं। णमो विउलमदीणं।।
णमो दसपुव्वीणं। णमो चउदसपुव्वीणं।।
णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं।।
णमो विउव्वा-इड्ढि-पत्ताणं।।
णमो विज्जाहराणं। णमो चारणाणं।।
णमो पण्णसमणाणं। णमो आगास-गामीणं।।
णमो आसीविसाणं। णमो दिट्ठिविसाणं।।
णमो उग्गतवाणं। णमो दित्ततवाणं।।
णमो तत्ततवाणं। णमो महातवाणं।
णमो घोरतवाणं, णमो घोरगुणाणं।।
णमो घोर परक्कमाणं। णमो घोरगुण-बंभयारीणं।।
णमो आमोसहि-पत्ताणं। णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं।।
णमो जल्लोसहि पत्ताणं। णमो विप्पोसहिपत्ताणं।।
णमो सव्वोसहिपत्ताणं। णमो मणबलीणं।।
णमो वचिबलीणं । णमो कायबलीणं।।

णमो खीरसवीणं। णमो सप्पिसवीणं।।
णमो महुरसवीणं। णमो अमियसवीणं।।
णमो अक्खीण-महाणसाणं। णमो वड्ढमाणाणं।।
णमो सिद्धायदणाणं। णमो भयवदो
महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्धरिसीणो चेदि।
जस्संतियं धम्मपहं णियच्छे, तस्संतियं वेणयियं पउंजे।
काएण वाचा मणसा वि णिच्चं, सक्कारए तं सिरपंचमेण।।

गणधरवलय मंत्र का पद्यानुवाद

–शंभु छंद–

मैं नमूँ जिनों को जो अर्हन्, अवधीजिन मुनि को नमूँ नमूँ।
परमावधि जिन को नमूँ तथा, सर्वावधि जिन को नमूँ नमूँ।।
मैं नमूँ अनंतावधि जिन को, अरु कोष्ठबुद्धि युत साधु नमूँ।
मैं नमूँ बीजबुद्धीयुत मुनि, पादानुसारियुत साधु नमूँ।।1।।

संभिन्नश्रोतृयुत साधु नमूँ, मैं स्वयंबुद्ध मुनिराज नमूँ।
प्रत्येक बुद्ध ऋषिराज नमूँ, पुनि बोधित बुद्ध मुनीश नमूँ।।
ऋजुमतिमनपर्यय साधु नमूँ, मैं विपुलमतीयुत साधु नमूँ।
मैं नमूँ अभिन्न सुदशपूर्वी, चौदशपूर्वी मुनिराज नमूँ।।2।।

अष्टांगमहाणिमित्तकुशली, नमूँ नमूँ विक्रियाऋद्धि प्राप्त।
विद्याधरऋषि को नमूँ नमूँ मैं, संयत चारणऋद्धि प्राप्त।।
मैं प्रज्ञाश्रमण मुनीश नमूँ, आकाशगामि मुनिराज नमूँ।
आशीविषयुत ऋषिराज नमूँ, दृष्टीविषयुत मुनिराज नमूँ।।3।।

मैं उग्रतपस्वी नमूँ दीप्ततपि, नमूँ तप्ततपसाधु नमूँ।
मैं नमूँ महातपधारी को, अरु घोरतपोयुत साधु नमूँ।।
मैं नमूँ घोरगुणयुत साधू, मैं घोरपराक्रम साधु नमूँ।
मैं नमूँ घोरगुणब्रह्मचारि, आमौषधिप्राप्त मुनीश नमूँ।।4।।

क्ष्वेलौषधिप्राप्त मुनीश नमूँ, जल्लौषधि प्राप्त मुनीश नमूँ।
विप्रुष औषधियुत साधु नमूँ, सर्वौषधि प्राप्त मुनीश नमूँ।।
मैं नमूँ मनोबलि मुनिवर को, मैं वचनबली ऋद्धीश नमूँ।
मैं कायबली मुनिनाथ नमूँ, मैं क्षीरस्रावी मुनिराज नमूँ।।5।।

मैं घृतस्रावी मुनिराज नमूँ, मैं मधुस्रावी मुनिराज नमूँ।
मैं अमृतस्रावी साधु नमूँ, अक्षीणमहानस साधु नमूँ।।
मैं वर्धमान ऋद्धीश नमूँ, मैं सिद्धायतन समस्त नमूँ।
मैं भगवन् महति महावीर, श्री वर्धमान बुद्धर्षि नमूँ।।6।।

–शेर छंद–

जिसके निकट में धर्मपथ को प्राप्त किया हूँ।
उनके निकट ही विनयवृत्ति धार रहा हूँ।।
नित काय से वचन से और मन से उन्हीं को।
पंचांग नमस्कार करूँ भक्ति भाव सों।।

अथ जिनगणधरवलययज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथ गणधरवलय पूजा

अथ स्थापना

–चौबोल छंद–

तर्ज–आवो बच्चों तुम्हें दिखायें.....

आवो हम सब करें अर्चना, गणधर देव प्रधान की।
जिनवर दिव्यध्वनी को झेलें, द्वादशांग श्रुतवान की।।वंदे गणधरम्-4

अड़तालिस ऋद्धी को धारें, द्वादशगण के ईश्वर हैं।
यंत्ररूप हैं मंत्ररूप हैं, तंत्ररूप भी परिणत हैं।।
ऐसे गुरु को वंदन करते, मिले राह कल्याण की।।आवो.।।

श्री गणधर गुरु की पूजा से, सर्वविघ्न संहार करें।
ज्वर अतिसार आदि रोगों का, क्षण भर में परिहार करें।।
आह्वानन कर जजते इनको, मिले ज्योति निज ज्ञान की।।आवो.।।

ॐ ह्रीं श्रीगणधरसमूह! अत्र एहि एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीगणधरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीगणधरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

तर्ज–मेरे देश की धरती....

गणधर की अर्चा, सकल विश्व में शांति सुधा बरसाये।
गणधर की.....
अगणित नदियों का नीर पिया, नहिं अब तक प्यास बुझा पाये।
इस हेतु आपकी पूजा को, कंचन झारी में जल लाये।।
गुरुपद में धारा करते ही....सब मन की प्यास बुझायें।।
गणधर की.....

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर की अर्चा, सकल विश्व में शांति सुधा बरसाये।
गणधर की.....
भव-भव में रोग शोक संकट, मानस देहज दुख पाये हैं।।
इसलिये आपकी पूजा को, चंदन केशर घिस लाये हैं।।
गुरु पद में चर्चन करते ही....तन मन शीतल हो जाये।।
गणधर की.....

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर की अर्चा, सकल विश्व में शांति सुधा बरसाये।
गणधर की.....
नश्वर सुख पाने की इच्छा से, दुःख अनंत उठाये हैं।
सरसों सम सुख नहिं मिला किंतु, भवदधि में गोते खाये हैं।।
इसलिये धौत सित अक्षत ले..... हम पुंज चढ़ाने आये।।
गणधर की.....

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर की अर्चा, सकल विश्व में शांति सुधा बरसाये।
गणधर की.....
मकरध्वज ने तीनों जग में, निज शर से जन को वश्य किया।
प्रभु के चरणाम्बुज में आकर, वह भी तो क्षण में वश्य हुआ।
इसलिए तुम्हारे चरणों में..... हम पुष्प चढ़ा सुख पायें।।
गणधर की.....

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर की अर्चा, सकल विश्व में शांति सुधा बरसाये।
गणधर की.....

यह क्षुधा पिशाची पिंड लगी, हम कैसे छुटकारा पायें।
तुम परमानंदामृत पीते, इसलिये प्रभो! शरणे आये।।
नैवेद्य चढ़ाकर तुम सन्मुख.....हम परम तृप्ति को पायें।।
गणधर की.....

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर की अर्चा, सकल विश्व में शांति सुधा बरसाये।
गणधर की.....
मिथ्यात्व अंधेरे में हमने, नहिं निज को किंचित् पहिचाना।
प्रभु तुम हो केवलज्ञान सूर्य, इसलिये उचित समझा आना।।
दीपक से तुम आरति करते .....मन का अंधेर मिटायें।।
गणधर की.....

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर की अर्चा, सकल विश्व में शांति सुधा बरसाये।
गणधर की.....
शाश्वत जिनमंदिर में असंख्य भी, धूप घड़ों में अग्नि जले।
निज सुरगण सुरभि धूप खेते, तब धूम्र दशों दिश में फैले।।
हम धूपायन में धूप खेय....निज के सब कर्म जलायें।।
गणधर की.....

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर की अर्चा, सकल विश्व में शांति सुधा बरसाये।
गणधर की.....
अंगूर अनार आम केला, फल अनंनास ले आये हैं।
वर मोक्ष महा फल पाने को, तुम निकट चढ़ाने आये हैं।।

फल से पूजा करके भगवन् ..... रत्नत्रय निधि पा जायें।।

गणधर की.....

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर की अर्चा, सकल विश्व में शांति सुधा बरसाये।

गणधर की.....

जल गंधादिक वसु अर्घ्य लिये, उसमें नवरत्न मिलाये हैं।
निज भाव अपूर्व-अपूर्व मिले, यह आशा लेकर आये हैं।।
चरणों में अर्घ्य चढ़ा करके..... नवनिद्धि ऋद्धि पा जायें।।

गणधर की.....

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–स्रग्विणी छंद–

नाथ पदकंज में शांतिधारा करूँ।
विश्व में शांति होवे यही कामना।।
आधि सब दूर हों चित्त में शांति हो।
भक्ति से प्राप्त हो शांति आत्यंतिकी।।

शांतये शांतिधारा।

नाथ के गुण सुमन आज चुन के लिये।
विश्व में यश सुरभि फैलती है प्रभो!।।
पुष्प अंजलि समर्पण करूँ प्रेम से।
पुण्य संपत्ति पाऊँ सुयश वृद्धि हो।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ मध्यस्थित षट् देवी पूजा

–शेर छंद–

सौधर्म इन्द्र मान्य पद्म ह्रद कमल पे जो।
श्रीधन सुपुत्र बुद्धि को देती हैं भक्त को।।
श्रीदेवी ये तीर्थेश मात को सदा सेवें।
गणधर चरण भक्ता इन्हें हम अर्घ्य को देवें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवि! इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ही देवी महापद्म ह्रद कमल में नित बसें।
भक्तों को लज्जा आदि गुणों को जो दे सकें।।
जिनमात को अनुराग भाव से सदा भजें।
गणधर चरण भक्ता इन्हें हम अर्घ्य से जजें।।2।।

ॐ ह्रीं ह्रीदेवि! इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

सरवर तिगिंछ कंज में देवी धृती कहीं।
धैर्यादि गुणों को सदा भक्तों को दे रहीं।।
जिनवर प्रसू की भक्ति से सेवा सदा करें।
गणधर चरण भक्ता को अर्घ्य दे सुखी करें।।3।।

ॐ ह्रीं धृतिदेवि! इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ह्रद केसरी कमल में कीर्ति देवी नित बसें।
सब जन को श्रेष्ठ भोग सुयश आदिदे सकें।।
जिनमात की सेवा करें गणधर चरण नमें।
इनको चढ़ाते अर्घ्य कीर्ति लोक में भ्रमें।।4।।

ॐ ह्रीं कीर्तिदेवि! इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ह्रद महापुंडरीक में बुद्धी सुरी रहें।
ये भेदज्ञान बुद्धि दे जिनभक्तिरत रहें।।
जिनमात की सेवा करें परिवार समेता।
गणधर चरण भक्ता जजें हम अर्घ्य समेता।।5।।

ॐ ह्रीं बुद्धिदेवि! इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

हृद पुंडरीक कंज में लक्ष्मी सुरी कहीं।
जिनदेव के शासन की लक्ष्मी बढ़ा रहीं।।
जिनराज प्रभू की करें सेवा सुभक्ति से।
गणधर चरण भक्ता इन्हें हम अर्घ्य से जजें।।6।।

ॐ ह्रीं लक्ष्मीदेवि! इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा–

गणधरगुरु के ऋद्धिमय, मंत्र सुअड़तालीस।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, नमूँ नमूँ नत शीश।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथ प्रथम वलय पूजा

तर्ज–सद्राह पे जीवन नैया लगा.....

–शंभु छंद–

गणधर के गुणों को गाते चलो, मनवांछित फल पा जावोगे।
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाते चलो, धन सुख संपद पा जावोगे।।टेक.।।
कर्मों को जीते वे जिन हैं, आचार्य उपाध्याय साधू भी।
जिनकी मुनि की अर्चा कर लो, आतम सुख भी पा जावोगे।।
।।गणधर.।।1।।
बहुविध अतिसार रोग हैजा, आदिक सब दोष विनश जाते।
सब कर्म शत्रु भी दूर भगें, सब ऋद्धि समृद्धी पावोगे।।
।।गणधर.।।2।।
घर पुत्र पिता परिजन पुरजन, ये अपने नहीं पराये हैं।
भगवान को अपना मान चलो, जिनगुण संपद् पा जावोगे।।
।।गणधर.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं जिनेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

गणधर के गुणों को गाते चलो, मनवांछित फल पा जावोगे।
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाते चलो, धन सुख संपद पा जावोगे।।टेक.।।
जो अवधीज्ञान धरें मुनिवर, जिन बनें मुक्ति को वर लेते।
वे आत्म रसास्वादी प्रभु हैं, उन नमत अवधि पा जावोगे।।
।।गणधर.।।1।।
नाना विध के ज्वर रोग नशे, तन में मन में भी शांती हो।
ऋद्धीधारी गणधर पूजा, करते भवदधि तर जावोगे।।
।।गणधर.।।2।।
माया के अंधेरे में प्राणी, नहिं ज्ञान किरण पा सकते हैं।
गुरुवों की शरण में आ जावो, फिर ज्ञान ज्योति पा जावोगे।।
।।गणधर.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं अवधिजिनेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

गणधर के गुणों को गाते चलो, मनवांछित फल पा जावोगे।
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाते चलो, धन सुख संपद पा जावोगे।।टेक.।।
जो मुनि परमावधि पा लेते, उस ही भव से शिव प्राप्त करें।
तुम उनकी शरण में आ जावो, जिनधर्मामृत पा जावोगे।।
।।गणधर.।।1।।
भक्तों के शिरोरोग सब ही, नश जाते जिनवर भक्ती से।
परमावधि जिन की भक्ति करो, परमावधि को पा जावोगे।।
।।गणधर.।।2।।
नानाविधि के संक्लेश किये, ज्ञानावरणादि बंधा करते।
इन कर्मों से छुटकारा हो, ऐसी युक्ती पा जावोगे।।
।।गणधर.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहिजिणाणं परमावधिजिनेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

गणधर के गुणों को गाते चलो, मनवांछित फल पा जावोगे।
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाते चलो, धन सुख संपद पा जावोगे।।टेक.।।
जो मुनि सर्वावधि ज्ञानी हैं, त्रिभुवन के मूर्त सभी जानें।
इनको भी मुक्ति इसी भव से, नमते युक्ती पा जावोगे।।
।।गणधर.।।1।।

भक्तों की सर्व नेत्र व्याधी, गणधर भक्ती से नश जातीं।
सर्वावधि ज्ञान मिलेगा तुम्हें, निज भेदज्ञान पा जावोगे।।
।।गणधर.।।2।।

इन मुनियों की श्रद्धा भक्ती, भवदधि से पार लगा देगी।
तुम इनकी शरण में आ जावो, फिर ज्ञान ऋद्धि पा जावोगे।।
।।गणधर.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं सर्वावधिजिनेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

गणधर के गुणों को गाते चलो, मनवांछित फल पा जावोगे।
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाते चलो, धन सुख संपद पा जावोगे।।टेक.।।
जिनकी अवधी का अंत नहीं, वे ही अनंत अवधी मानें।
ये केवलज्ञानी ऋषि होते, इनसे निजरश्मी पाओगे।।
।।गणधर.।।1।।

गणधर भक्ती से नानाविध, भी कर्ण रोग नश जाते हैं।
इन्द्रिय विषयों को तजते ही, निज ज्ञान अतीन्द्रिय पावोगे।।
।।गणधर.।।2।।

सब जन में केवलज्ञान भरा, यह कर्मावरण उसे ढकता।
कैसे विनाश हो कर्मों का, भक्ती से शक्ती पावोगे।।
।।गणधर.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं अनंतावधिजिनेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

गणधर के गुणों को गाते चलो, मनवांछित फल पा जावोगे।
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाते चलो, धन सुख संपद पा जावोगे।।टेक.।।
जैसे कोठे में धान्य भरें, सब पृथक् पृथक् रह सकते हैं।
वैसे ही कोष्ठबुद्धि मुनि को, नमते बुद्धी पा जावोगे।।
।।गणधर.।।1।।

नाना कुशूल गुल्मादि रोग, सब उदर रोग नश जाते हैं।
जिन कोष्ठबुद्धि की पूजा से, मानस शांती पा जावोगे।।
।।गणधर.।।2।।

मति ज्ञानावरण क्षयोपशम से, बुद्धी में अतिशय आ जाता।
तुम इन मुनियों की भक्ति करो, धारणा शक्ति पा जावोगे।।
।।गणधर.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं कोष्ठबुद्धिऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

गणधर के गुणों को गाते चलो, मनवांछित फल पा जावोगे।
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाते चलो, धन सुख संपद पा जावोगे।।टेक.।।
ज्यों बीज से खेत फलें कोसों, त्यों ज्ञान बढ़े जिन मुनियों का।
उन बीज बुद्धि ऋषि को पूजो, तुम ज्ञान किरण पा जावोगे।।
।।गणधर.।।1।।

हिचकी व श्वास संग्रहणि आदि, नाना विध रोग विनश जाते।
जिन बीजबुद्धि की पूजा से, तुम पूर्ण स्वस्थ हो जावोगे।।
।।गणधर.।।2।।

आत्मा में ज्ञान अनंत भरा, कर्मों ने इसको क्षीण किया।
गुरुभक्ति से इसे बढ़ाकर तुम, आकाश को भी छू जावोगे।।
।।गणधर.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं बीजबुद्धिऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

गणधर के गुणों को गाते चलो, मनवांछित फल पा जावोगे।
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाते चलो, धन सुख संपद पा जावोगे।।टेक.।।
जो एक मात्र पद पढ़ते ही, संपूर्ण ग्रंथ का अर्थ करें।
यह पदानुसारी बुद्धि ऋद्धि, जजते इसको पा जागे।।
।।गणधर.।।1।।

सब जन के बैर परस्पर के, गणधर पूजा से दूर भगें।
आपस में परम प्रीति होगी, त्रैलोक्य प्रेम पा जावोगे।।
।।गणधर.।।2।।

सब पाठ याद कर कर भूलें, धारणावरण स्मृति हरता।
ऋषियों की पदरज शिर पे धरो, स्मरण शक्ति पा जावोगे।।
।।गणधर.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पादाणुसारीणं पादानुसारिणीबुद्धिऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

–दोहा–

जिन से पदानुसारि तक, ऋद्धिप्राप्त गणनाथ।
पूर्ण अर्घ से पूजहूँ, नमूँ नमाकर माथ।।1।।

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं प्रभृति पादाणुसारिपर्यंतऋद्धिप्राप्तेभ्यः गणधरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ द्वितीय वलय पूजा

अथ मंडलस्योपरि द्वितीयवलये (दले) पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

तर्ज–गोमटेश जय गोमटेश.....

आत्मज्योति, जय आत्मज्योति, मम हृदय विराजो-2।
हम यही भावना करते हैं, ऐसा आने वाला कल हो।।
हो नगर-नगर में जिनभक्ती, सारे जग में शुभ मंगल हो।।
।।हम.।।1।।

श्रोत्रेन्द्रिय के उत्कृष्ट क्षेत्र के, बाहर का भी जो सुन लें।
संख्यातों योजन तक मानव, पशु के सब शब्द समझ भी लें।।
संभिन्न श्रोतृबुद्धी मुनि को, वंदन करले मन उज्ज्वल हो।।
।।हम.।।2।।

जो परम तपस्या करते हैं, वे ही ऐसी ऋद्धी पाते।
इनसे जन-जन का हित करके, वे मुक्ति वल्लभा पा जाते।।
इन मुनियों की पूजा करते-2, मेरा जीवन भी उज्ज्वल हो।।
।।हम.।।3।।

मानव के खांसी श्वांस आदि, नाना रोगों की शांती हो।
सब पीड़ायें भी तत्क्षण ही, नश जावें यदि जिन भक्ती हो।।
ऐसे गणधर गुरु को वंदत, सब विघ्न नशें सुख अविचल हो।।
।।हम.।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोदाराणं संभिन्नश्रोतृत्वऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

आत्मज्योति, जय आत्मज्योति, मम हृदय विराजो-2।
हम यही भावना करते हैं, ऐसा आने वाला कल हो।।टेक.।।
हम यही भावना करते हैं, ऐसा आने वाला कल हो।
हो नगर-नगर में जिनभक्ती, सब जन-जन का शुभमंगल हो।।
।।हम.।।1।।

जो जन गुरु के उपदेश बिना, स्वयमेव बोध को पाते हैं।
वे स्वयंबुद्ध ऋद्धी धरते, भक्तों की बुद्धि बढ़ाते हैं।।
इन मुनियों को वंदन करते-2, मेरा मन अतिशय उज्ज्वल हो।।
।।हम.।।2।।

यह तन नाना रोगों का घर, नश्वर है घृणित अपावन है।
इस तन से संयम धारण कर, मुनि बनते तरण व तारण हैं।।
ऐसे मुनियों की पूजा कर-2, मेरा जीवन भी उज्ज्वल हो।।
।।हम.।।3।।

जो कविता अरु वादित्व शक्ति, अतिशायी पाकर भी निस्पृह।
जिनधर्म प्रभावन करें सतत, निजमुक्तिरमा में भी सस्पृह।।
ऐसे गणधरगुरु को वंदत, मेरा मन निज में निश्चल हो।।
।।हम.।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धाणं स्वयंबुद्धत्वऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

आत्मज्योति, जय आत्मज्योति, मम हृदय विराजो-2।
हम यही भावना करते हैं, ऐसा आने वाला कल हो।।
जो उल्का पतन आदि लखकर, वैराग्य लिये संयम धारें।।
ऐसे मुनि ही प्रत्येक बुद्ध, होकर अगणित जन को तारें।
इन मुनियों की पूजा करते-2, भक्ती ध्वनि का कोलाहल हो।।
।।हम.।।1।।

जो मुनी बहुत विध तप तपते, वे मुक्ति राज्य को पा लेते।
ऐसे मुनि के चरणोदक से, जन मस्तक पावन कर लेते।।
इन गुरु की पूजा करने से-2, मेरा जीवन भी उज्ज्वल हो।।
।।हम.।।2।।

परवादी मिथ्या विद्या के, मद से जिनधर्म विरोधी हों।
शास्त्रार्थ कुशल परमत भेदी, जिनधर्म प्रभावक बुद्धी हो।।
ऐसे गणधर गुरु स्वयंबुद्ध, इन वंदन से सुख अविचल हो।।
।।हम.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाणं प्रत्येकबुद्धऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

आत्मज्योति, जय आत्मज्योति, मम हृदय विराजो-2।
हम यही भावना करते हैं, ऐसा आने वाला कल हो।।
जो गुरुओं का उपदेश सुनें, बोधित हों रत्नत्रय धारें।
अट्ठाइस मूलगुणों से युत, वे साधू भव्यों को तारें।।

इन गुरुओं की पूजा करते-2, मिल जावे पूजा का फल हो।।
।।हम.।।1।।

जिनकी भक्ती से चोर लुटेरों, के भय स्वयं विनश जाते।
जो हित मित भाषा समिति धरें, सब जन को तर्पित कर पाते।।
ऐसे गणधर गुरु को वंदत, मेरा मन अतिशय निश्छल हो।।
।।हम.।।2।।

यह मोहनीय है महाशत्रु, सब कर्मों का यह राजा है।
इसका दर्शन मोहनीय भेद, नशते सम्यक्त्व प्रकाशा है।।
क्षायिक सम्यक्त्व मिले मुझको-2, मेरा जीवन अति उज्ज्वल हो।।
।।हम.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धाणं बोधितबुद्धऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

आत्मज्योति, जय आत्मज्योति, मम हृदय विराजो-2।
हम यही भावना करते हैं, ऐसा आने वाला कल हो।।
मन वच तन से अति सरल मनोगत, सभी वस्तु को जो जानें।
वे ऋजुमति मन पर्ययज्ञानी, मूर्तिक पदार्थ को ही जानें।
उन मुनियों की पूजा करते-2, सब जन मन में भी हलचल हो।।
।।हम.।।1।।

सब जन को शांति करें गणधर, इस ऋजुऋद्धी को पाकरके।
सब वैर विरोध तजे तत्क्षण, इन गुरु की चरण शरण आके।।
सब ज्ञान स्वयं ही प्रगटित हों, निज आत्मा में मन निश्चल हो।।
।।हम.।।2।।

प्रथमानुयोग करणानुयोग, चरणानुयोग पढ़ते-पढ़ते।
द्रव्यानुयोग के पात्र बने, जिनवाणी को पढ़ते-पढ़ते।।
इन ऋषियों को वंदन करते-2, मेरा जीवन भी उज्ज्वल हो।।
।।हम.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं ऋजुमतिऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

आत्मज्योति, जय आत्मज्योति, मम हृदय विराजो-2।
हम यही भावना करते हैं, ऐसा आने वाला कल हो।।
जो जन के सरल कुटिल मनगत, संपूर्ण मूर्त वस्तू जानें।
वे विपुलमती मनपर्यय मुनि, इस भव से सकल कर्म हानें।।
ऐसे सिद्धों की पूजा कर-2, भक्तों का मन अति निर्मल हो।
।।हम.।।1।।

जिनकी भक्ती से बहुश्रुत ज्ञान, प्रगट हो परमानंद मिले।
जिनके वन्दन से ज्ञान सूर्य, प्रगटे निज हृदय सरोज खिले।।
ऐसे गणधर गुरु को वंदत, मेरा मन अतिशय निर्मल हो।।
।।हम.।।2।।

जो पाँच महाव्रत पाँच समिति, तीनों गुप्ती को धरते हैं।
वे नरतन को पावन करके, निज आत्मनिधी को वरते हैं।।
इन मुनियों को शत-शत वंदन, मेरा जीवन भी उज्ज्वल हो।।
।।हम.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं विपुलमतिऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

आत्मज्योति, जय आत्मज्योति, मम हृदय विराजो-2।
हम यही भावना करते हैं, ऐसा आने वाला कल हो।।
ग्यारह अंगों दशपूर्वों को, पढ़कर दशपूर्वी मुनि इनसे।
जब दशवां पूर्व पढ़े तब ही, विद्यादेवी के आने से।।
जो चारित से विचलितनहिं हों-2, इन नमते आतम निर्मल हो।।
।।हम.।।1।।

इन गुरुओं की भक्ती करते, संपूर्ण शास्त्र का ज्ञान मिले।
व्रत शील पूर्ण हो जाते हैं, इन जजते ज्ञान प्रभात खिले।।
ऐसे गणधर की पूजा कर, मेरा मन निज में निश्चल हो।।
।।हम.।।2।।

इन मुनियों का व्रत ब्रह्मचर्य, त्रैलोक्यपूज्य कहलाता है।
इन शरणागत में आने से, चारित्र विमल हो जाता है।
इन मुनि की पूजा करने से-2, लौकांतिक सुरपद का फल हो।।
।।हम.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं दशपूर्वित्वऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

आत्मज्योति, जय आत्मज्योति, मम हृदय विराजो-2।
हम यही भावना करते हैं, ऐसा आने वाला कल हो।।
जो चौदह पूर्वों के ज्ञाता, श्रुतकेवलज्ञानी पद लभते।
उनके चरणों का आश्रय ले, क्षायिक समकित भी पा सकते।।
ये परोक्ष से त्रिभुवन जानें-2, इन भक्ती से श्रुतनिधि फल हो।।
।।हम.।।1।।

इन गुरु की भक्ती से तत्क्षण, निज-पर का शास्त्र ज्ञान होवे।
स्वपर समयविद् गणधर गुरु, अज्ञान पापमल भी धोवें।।
इन गणधर का वंदन करते, मेरा मन निज में निश्चल हो।।
।।हम.।।2।।

जो आर्तरौद्र दुर्ध्यान रहित, शुभ धर्म-शुक्ल के ध्यानी हैं।
इन गुरु की महिमा अद्भुत है, ये पाते शिव रजधानी हैं।।
इन गणधर की पूजा करते-2, मेरा जीवन अति उज्ज्वल हो।।
।।हम.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं चतुर्दशपूर्वित्वऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

तर्ज–यह नंदनवन, यह सुमनसवन....

यह मानव तन, अनमोल रतन, पा विषयों में मत फंस जाना।
भवसिंधु अगर तरना चाहो, जिनचरण शरण में आ जाना।।टेक.।।
स्वर व्यंजन लक्षण चिन्ह स्वप्न, नभ भौम अंग ये आठ निमित।

इनसे शुभ-अशुभ बताते जो, उनके ऋद्धी अष्टांग निमित।।
इन मुनियों का वंदन करके, पूजन कर पुण्य कमा जाना।।
।।यह.।।1।।

ये जीवन-मरण आदि ज्ञाता, फिर भी समरस का पान करें।
निजशुक्लध्यान के द्वारा ही, सब कर्मनाश शिवनारि वरें।।
उन गणधर की पूजा करके, परमानंदामृत पा जाना।।
।।यह.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं अष्टांगनिमित्तज्ञातृत्वसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

यह मानव तन, अनमोल रतन, पा विषयों में मत फंस जाना।
भवसिंधु अगर तरना चाहो, जिनचरण शरण में आ जाना।।

अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, प्राप्ती प्रकाम्य ईशित्व वशी।
अप्रतीघात अंतर्धानी, विक्रिया कामरूपी आदी।
विक्रिया ऋद्धि गुरु को पूजो, तुम इनका वंदन कर जाना।।
।।यह.।।1।।

ये ऋद्धी जो मुनि पाते हैं, वे विष्णुकुमार सदृश होते ।
मुनियों की रक्षा करके वे, सातिशय पुण्य भागी होते ।।
गणधर भक्ती से इच्छित फल, पाकर आतमनिधि पा जाना।।
।।यह.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं विक्रियाऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

यह मानव तन, अनमोल रतन, पा विषयों में मत फंस जाना।
भवसिंधु अगर तरना चाहो, जिनचरण शरण में आ जाना।।

जातीविद्या कुलविद्या तज, तपविद्या धर जो साधू हैं।
विद्यानुवाद पढ़कर भी मुनि, माने विद्याधर साधू हैं।।
ये विद्याओं से काम न लें, इनकी पूजा कर सुख पाना।।
।।यह.।।1।।

जो महासाधु संयमधारी, तपकर अज्ञान हटाते हैं।
इनकी भक्ती से गगन गमन, शक्ती भाक्तिक जन पाते हैं।।
ये आत्मसुधारस पीते हैं, इनका वंदन कर हर्षाना।।
।।यह.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं विद्याधरत्वऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

यह मानव तन, अनमोल रतन, पा विषयों में मत फंस जाना।
भवसिंधु अगर तरना चाहो, जिनचरण शरण में आ जाना।।

जल जंघा तंतू फल व पुष्प, ये बीज गगन अरु श्रेणी हैं।
इन पर चलते नहिं जीव मरें, आठों विध चारण ऋद्धी हैं।।
इन चारण ऋद्धी गुरुवों की, पूजा कर पुण्य कमा जाना।।
।।यह.।।1।।

इनकी भक्ती से नष्ट वस्तु का, ज्ञान मनोगत ज्ञान मिले।
इनके प्रसाद से विक्रिय कर, अतिशय ऋद्धी भी स्वयं मिले।।
इन परमानंद रसास्वादी को, नमते निजसुख पा जाना।।
।।यह.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं चारणऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

यह मानव तन, अनमोल रतन, पा विषयों में मत फंस जाना।
भवसिंधु अगर तरना चाहो, जिनचरण शरण में आ जाना।।

पूरब भव के संस्कारों से, ज्यों की त्यों ज्ञान प्रगट होता।
गुरुमुख से विनय सहित पढ़कर, वैनयिक ज्ञान विकसित होता।।
या तप बल से प्रज्ञा प्रगटे, इन मुनि का वंदन कर जाना।।
।।यह.।।1।।

गणधर की प्रज्ञा स्वाभाविक, ये प्रज्ञाश्रमण महामुनि हैं।
औत्पत्तिक विनयज कर्मज अरु, परिणामिक प्रज्ञा चउविध हैं।।
आयू अवसान ज्ञानधारी, प्रज्ञाश्रमणों के गुण गाना।।
।।यह.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं प्रज्ञाश्रमणऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

यह मानव तन, अनमोल रतन, पा विषयों में मत फंस जाना।
भवसिंधु अगर तरना चाहो, जिनचरण शरण में आ जाना।।

मनुजोत्तर पर्वत पर्यंते, इच्छानुसार नभ में विहरें।
आकाशगमनचारी वे मुनि, तप बल से ऋद्धी प्राप्त करें।।
इन महासंयमी मुनियों की, अर्चा कर पाप नशा जाना।।
।।यह.।।1।।

प्राणीवध का परिहार करें, रत्नत्रय साधन में रत हैं।
इनके प्रसाद से अंतरिक्ष में, गमन शक्ति मिल जाती है।
इन गणधर की पूजा करके, जिनगुण संपत्ती पा जाना।।
।।यह.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं आकाशगामिऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

यह मानव तन, अनमोल रतन, पा विषयों में मत फंस जाना।
भवसिंधु अगर तरना चाहो, जिनचरण शरण में आ जाना।।

हालाहल विष का जहर चढ़ा, जिनके वचनों से दूर भगे।
ऐसी आशीविष ऋद्धि धरें, वे जन-जन का उपकार करें।।
इन गणधर गुरु का आश्रय ले, दुख से छुटकारा पा जाना।।
।।यह.।।1।।

नानाविध व्याधी से पीड़ित, या दरिद्रता से दुखी हुये।
इन गुरु का आशिष मिलते ही, सब दुख से जन मन मुक्त हुये।।
इन भक्ती से विद्वेष मिटे, इनसे मन पावन कर जाना।।
।।यह.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं आशीर्विषत्वऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

यह मानव तन, अनमोल रतन, पा विषयों में मत फंस जाना।
भवसिंधु अगर तरना चाहो, जिनचरण शरण में आ जाना।।
यदि क्रोधित हो मुनि कह देवे, ''मर जा'' तत्क्षण जन मर जावें।
नहिं किंतु दिगम्बर मुनि ऐसा, दुष्कृत्य कभी भी कर पावें।।
इनके अवलोके विष उतरे, तुम इनकी शरण में आ जाना।।
।।यह.।।1।।

इनके देखे अस्वस्थ जीव, हों पूर्ण स्वस्थ धन-धान्य भरें।
ये दृष्टीविष गणधर कृपालु, सब जन का ही उपकार करें।।
इनकी पूजा कर स्थावर-त्रस, कृत सब विघ्न नशा जाना।।
।।यह.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं दृष्टिविषत्वऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा–

गणधर ऋषिवर साधुगण, संभिन्न श्रोतृ आदि।
दृष्टिविष तन ऋद्धियुत, जजत मिटे सब व्याधि।।

ॐ ह्रीं अर्हं संभिन्नश्रोतृ प्रभृति दृष्टिविषान्तर्द्धिप्राप्तेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ तृतीयवलय पूजा

अथ मंडलस्योपरि तृतीयवलये (दले) पुष्पांजलिं क्षिपेत्

तर्ज–करो कल्याण आतम का, भरोसा है नहीं पल का .....

नमन है सर्व गणधर को, जिन्होंने कर्म अरि नाशे।
नमन उन ऋद्धियों को भी, जिन्होंसे आत्मगुण भासे।।टेक।।
पराक्रम घोर है जिनका, त्रिजग संहार में क्षम हैं।
जलधि शोषण धरा निगलन, प्रभृति सब कार्य कर पाते।।
।।नमन.।।1।।

विरोधी के वचन कीलित, स्वयं होते यही फल है।
गुरू की भक्ति से निश्चित, सभी जन इष्ट पाते हैं।।
।।नमन.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं उग्रतपःऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

नमन है सर्व गणधर को, जिन्होंने कर्म अरि नाशे।
नमन उन ऋद्धियों को भी, जिन्होंसे आत्मगुण भासे।।टेक।।
बहुत उपवास करके भी, जिन्हों की दीप्ति बढ़ जावे।
बिना आहार के भी वे, अतुल शक्ती बढ़ाते हैं।।
।।नमन.।।1।।

महामुनि दीप्ततपधारी, मुक्तिकन्या वरण करते।
भक्ति से सैन्य स्तंभन, भक्त कर यश कमाते हैं।।
।।नमन.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं दीप्ततपःऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

नमन है सर्व गणधर को, जिन्होंने कर्म अरि नाशे।
नमन उन ऋद्धियों को भी, जिन्होंसे आत्मगुण भासे।।टेक।।

अधिक उपवास करने से, मूत्रमल आदि नश जावें।
करें आहार नहिं नीहार, ऐसी ऋद्धि पाते हैं।।
।।नमन.।।1।।

महामुनि तप्ततपधारी, अतीन्द्रिय सुख के अधिकारी।
इन्हों से अग्नि स्तंभन, शक्ति पा यश कमाते हैं।।
।।नमन.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं तप्ततपःऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

नमन है सर्व गणधर को, जिन्होंने कर्म अरि नाशे।
नमन उन ऋद्धियों को भी, जिन्होंसे आत्मगुण भासे।।टेक।।
अनेकों ऋद्धि से संयुत, महातप जो सदा तपते।
देह की कांति से शोभें, सभी के दुख नशाते हैं।।
।।नमन.।।1।।

भक्ति से नीर स्तंभन, शक्ति को भक्त पा जाते।
करें हम वंदना इनकी, ये आतमनिधि दिलाते हैं।।
।।नमन.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं महातपःऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

नमन है सर्व गणधर को, जिन्होंने कर्म अरि नाशे।
नमन उन ऋद्धियों को भी, जिन्होंसे आत्मगुण भासे।।टेक।।
घोर तप ऋद्धि जो धारें, सु बारह तप सभी तपते।
भयंकर वन में रह करके, अभय पद वे ही पाते हैं।।
।।नमन.।।1।।

करें सर्पादि विष को दूर, रोगादी विनाशें भी।
त्रिविध योगी महामुनि ये, स्वयं शिवधाम पाते हैं।।
।।नमन.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं घोरतपःऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

नमन है सर्व गणधर को, जिन्होंने कर्म अरि नाशे।
नमन उन ऋद्धियों को भी, जिन्होंसे आत्मगुण भासे।।टेक।।
मुनी के घोर गुणऋद्धी, डरे सब भूत प्रेतादी।
लाख चौरासि उत्तरगुण, धरें निजधाम पाते हैं।।
।।नमन.।।1।।
काच कामल प्रभृति रोगादी गुरुभक्ती से नश जाते।
इन्हों की भक्ति पूजा से, भक्त निज सिद्धि पाते हैं।।
।।नमन.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं घोरगुणऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

नमन है सर्व गणधर को, जिन्होंने कर्म अरि नाशे।
नमन उन ऋद्धियों को भी, जिन्होंसे आत्मगुण भासे।।टेक।।
पराक्रम घोर है जिनका, त्रिजग संहार में क्षम हैं।
जलधि शोषण धरा निगलन, प्रभृति सब कार्य कर पाते।।
।।नमन.।।1।।
महामुनि वीतरागी हैं, अशुभ किंचित् नहीं करते।
भक्तगण सिंह के भय को, दूर कर सौख्य पाते हैं।।
।।नमन.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणपरक्कमाणं घोरगुणपराक्रमऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

नमन है सर्व गणधर को, जिन्होंने कर्म अरि नाशे।
नमन उन ऋद्धियों को भी, जिन्होंसे आत्मगुण भासे।।टेक।।
घोरगुण ब्रह्मचारी मुनि, अखंडित ब्रह्मचारी हैं।
परम शांती धरें निज में, अखंडित सौख्य पाते हैं।।
।।नमन.।।1।।

उपद्रव रोग कलहादी, वैर दुर्भिक्ष वध बंधन।
भूतप्रेतादि भय नाशें, जो गुरु पूजा रचाते हैं।।
।।नमन.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणबंभचारीणं घोरगुणब्रह्मचारित्वऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

तर्ज–तज दिया छोड़ घर बार, कुटुंब परिवार धार मुनि बाना.....

श्री गणधर गुरु भगवंत, महागुणवंत, नमूँ शिर नाऊँ।
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।
जिनका संस्पर्श परम औषधि, सब रोग शोक दुख हरे तुरत।
उनकी पूजा भक्ती कर पाप नशाऊँ, भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।1।।
ये मुनि आमौषधि ऋद्धि धरें, निज आत्मा को भी स्वस्थ करें।
इनके चरणों का आश्रय ले सुख पाऊँ, भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।2।।
जो जन्मजात ही वैर धरें, वे गुरु भक्ती से प्रेम करें।
इनकी भक्ती से निज में प्रीति बढ़ाऊँ, भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं आमौषधिऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

श्री गणधर गुरु भगवंत, महागुणवंत, नमूँ शिर नाऊँ।
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।
जिनके तन का मल किंचित् भी, सब रोग शोक हर देता भी।
उन खेलौषधि मुनि के चरणों शिर नाऊँ, भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।1।।
रोगी मुनि की सेवा करते, जो मन में ग्लानी नहिं धरते।
उनको हो ऐसी ऋद्धि प्रगट गुण गाऊँ, भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।2।।
जो ऐसे गुरु की भक्ति करें, अपमृत्यु नाश दीर्घायु धरें।
इनको पूजत ही निज आतम निधि पाऊँ, भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं क्ष्वेलौषधिऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

श्री गणधर गुरु भगवंत, महागुणवंत, नमूँ शिर नाऊँ।
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।

तन का बाहिर मल जल्ल कहा, ये भी औषधि सम प्रगट रहा।
इन जल्लौषधि मुनि नमते रोग नशाऊँ, भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।1।।

तप तपते तन पावन होता, सब जन के दुख दारिद धोता।
ऐसे गुरुओं के गुण गाकर हर्षाऊँ, भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।2।।

जो मन के भ्रम को दूर करें, व्याघ्रादि जंतु भी भीति हरें।
ऐसे गुरु को पूजत निर्भय बन जाऊँ, भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लौसहिपत्ताणं जल्लौषधिऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

श्री गणधर गुरु भगवंत, महागुणवंत, नमूँ शिर नाऊँ।
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।

जिनकी पसेव कण आदि सभी, तन मल बन जाते औषधि भी।
इन ऋषियों की ऋद्धी को शीश नमाऊँ, भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।1।।

जो गुरु की सेवा करते हैं, आहारदान बहु देते हैं।
वे पुण्य सातिशय भरें जजत सुख पाऊँ, भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।2।।

इनकी भक्ती से इस जग में, गजमारि उपद्रव आदि भगें।
ऐसे गुरु की पूजा से शांति बढ़ाऊँ, भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं विप्रुषौषधिऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

श्री गणधर गुरु भगवंत, महागुणवंत, नमूँ शिर नाऊँ।
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।

जिनके तन से स्पर्श वायु, करती रोगी को दीर्घ आयु।
उनके चरणों की धूली शीश चढ़ाऊँ, भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।1।।

जो मुनि सर्वौषधि ऋद्धि धरें, सब व्याधि विषादिक कष्ट हरें।
उनकी पूजा कर पूर्ण स्वस्थता पाऊँ, भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।2।।

जो सर्प बिच्छुमारी संकट, नरमारि उपद्रव आदि विविध।
इन गुरुपूजा से दूर भगें सुख पाऊँ, भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं सर्वौषधिऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।

श्री गणधर गुरु भगवंत, महागुणवंत, नमूँ शिर नाऊँ।
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।

जो इक मुहूर्त में द्वादशांग, चिंतन करते नहिं होय श्रांत।
उन मनोबली मुनियों को नितप्रति ध्याऊँ, भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।1।।

इन गुरुओं के गुण को गावें, मेरा मन सुस्थिर हो जावे।
इन भगवंतों को हृदय कमल में लाऊँ, भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।2।।

जो अश्वमारि आदिक संकट, भग जाते पशुओं के बहुविध।
इन गुरु प्रसाद से मानस शक्ति बढ़ाऊँ, भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं मनोबलऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

श्री गणधर गुरु भगवंत, महागुणवंत, नमूँ शिर नाऊँ।
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।

जो द्वादशांग का पाठ करें, बस इक मुहूर्त में पूर्ण करें।
फिर भी नहिं थकता कंठ उन्हें शिर नाऊँ, भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।1।।

इन मुनि को वचन सिद्धि वरती, केवलि में दिव्यध्वनि खिरती।
इन मुक्तिरमा पति के गुण को नित ध्याऊँ, भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।2।।

अज मेषमारि संकट बहुविध, गुरु पूजा से नशते सब दुख।
बहुभोग अभ्युदय सुखप्रद गुरुगुण गाऊँ, भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं वचोबलऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।

श्री गणधर गुरु भगवंत, महागुणवंत, नमूँ शिर नाऊँ।
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।

संवत्सर भी उपवास करें, बाहूबलि सम वो शक्ति धरें।
इन कायबली के चरण हृदय में लाऊँ, भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।1।।
ये त्रिभुवन को भी अंगुलि पर, बस उठा सकें यह शक्ति प्रवर।
शिवधाम बसें ऐसे गुरु के गुण गाऊँ, भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।2।।
गो महिष मारि संकट नाना, गुरुभक्ति हरे यह सरधाना।
तनु शक्ति बढ़े निज आतम गुण विकसाऊँ, भक्ती से अर्घ्य चढ़ाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं कायबलऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

तर्ज– मेरे मन मंदिर में आन.....

वंदूँ श्रीगणधर गुणखान, करो मेरे कर्मों की हान।
नीरस या विषमय भोजन हो, पाणि पात्र में आते पय हो।।
क्षीरस्रवी ये ऋद्धि महान, करो मेरे कर्मों की हान।।1।।
मुक्तिरमा इनको ही चाहे, भक्त भक्तिनद में अवगाहें।
मैं भी नमूँ सदा गुणखान, करो मेरे कर्मों की हान।।2।।
गण्डकमाला कुष्ठ क्षयादी, गुरुभक्ती से नशतीं व्याधी।
मिले आत्म आरोग्य महान, करो मेरे कर्मों की हान।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं क्षीरस्रावित्रऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।

वंदूँ श्रीगणधर गुणखान, करो मेरे कर्मों की हान।
करपुट में आहार दिया जो, रूखा भी घृतमय होता वो।
घृतस्रावी ये ऋद्धि महान, करो मेरे कर्मों की हान।।1।।
ये मुनि शिवपद पा जाते हैं, हम इनके आश्रय आते हैं।
इनके भक्त बने धनवान, करो मेरे कर्मों की हान।।2।।
एक दोय त्रय दिन अंतर में, इकांतरा आदिक ज्वर तन में।
सब विध ज्वर नशते दुखदान, करो मेरे कर्मों की हान।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं सर्पिःस्रावित्रऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।

वंदूँ श्रीगणधर गुणखान, करो मेरे कर्मों की हान।
करपुट में कटु भी भोजन हो, मधुवत् मधुर स्वाद परिणत हो।।
भक्त स्वस्थता लहें महान, करो मेरे कर्मों की हान।।1।।
इनके वचन मधुर प्रिय हितकर, पुण्य उदय से भक्त शिवंकर।
नमूँ नमूँ ये सौख्य निधान, करो मेरे कर्मों की हान।।2।।
पित्त कुपित से बहुविध व्याधी, अल्सर आदि देह में व्यापीं।
गुरुभक्ती से स्वास्थ्य महान, करो मेरे कर्मों की हान।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं मधुस्रावित्रऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

वंदूँ श्रीगणधर गुणखान, करो मेरे कर्मों की हान।
पाणिपात्र में आया भोजन, अमृत सम बन जाता तत्क्षण।
अमृतस्रावी मुनि सुखदान, करो मेरे कर्मों की हान।।1।।
इनके वच अमृतसम पोषें, भक्ती कर जन मन संतोषें।
नमूँ नमूँ ये समसुख खान, करो मेरे कर्मों की हान।।2।।
स्मृति शक्ती बढ़ती प्रतिक्षण, सब उपसर्ग दूर हों तत्क्षण।
इन गुरु की करुणा सुखदान, करो मेरे कर्मों की हान।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं अमृतस्रावित्रऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

वंदूँ श्रीगणधर गुणखान, करो मेरे कर्मों की हान।
जिस घर में आहार करें मुनि, भोजन क्षीण न होता उस दिन।।
संख्यातों करते क्षुध हान, करो मेरे कर्मों की हान।।1।।
मुनि के चहुंदिश चार हाथ में, जीव असंख्ये एक साथ में।
ये अक्षीण ऋद्धि अमलान, करो मेरे कर्मों की हान।।2।।
सब जन वश हों गुरुभक्ती से, इन अक्षीण ऋद्धि मुनि जजते।
मनवश कर तिष्ठूँ निज थान, करो मेरे कर्मों की हान।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं अक्षीणमहानसऋद्धिसंपन्नेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।

वंदूँ श्रीगणधर गुणखान, करो मेरे कर्मों की हान।
वृद्धिंगत महिमा के धारी, प्रभु तुम गुण अनंत भंडारी।
जिनका केवलज्ञान महान, करो मेरे कर्मों की हान।।1।।
नमूँ नमूँ मैं भक्ति भाव से, मेरा ज्ञान पूर्ण हो प्रगटे।
सर्व सुखों के आप निदान, करो मेरे कर्मों की हान।।2।।
सुगती के साधन बढ़ते हैं, राजतंत्र के भय नशते हैं।
वृद्धि आत्मगुण की अमलान, करो मेरे कर्मों की हान।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं वर्द्धमानेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।

वंदूँ श्रीगणधर गुणखान, करो मेरे कर्मों की हान।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनमंदिर, सिद्धायतन कहाते सुंदर।
सिद्धक्षेत्र भी पूज्य महान, करो मेरे कर्मों की हान।।1।।
ज्ञानकिरण से सर्वलोक को, व्याप्त किया सारे अलोक को।
जगत व्याप्त विष्णू भगवान, करो मेरे कर्मों की हान।।2।।
निशदिन यही मंत्र जपने से, राजा आदिक वश में होते।
सर्व ऋद्धियाँ हों वश आन, करो मेरे कर्मों की हान।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायदणाणं सर्वसिद्धायतनेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।

वंदूँ श्रीगणधर गुणखान, करो मेरे कर्मों की हान।
बुद्ध ऋषी केवलज्ञानी हैं, पंचकल्याणक के स्वामी हैं।।
नमूँ चरण कमलों में आन, करो मेरे कर्मों की हान।।1।।
सभी ऋद्धियों को प्रगटित कर, शिवलक्ष्मी के हुए श्रेष्ठ वर।
नमते नवनिधि ऋद्धि प्रधान, करो मेरे कर्मों की हान।।2।।
इसे जपें जो भक्ती भाव से, सभी सिद्धियाँ प्रगटे उनके।
महति महावीर भगवान, करो मेरे कर्मों की हान।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदिमहावीरवड्ढमाणबुद्धिरिसीणं भगवते

महतिमहावीर वर्द्धमानबुद्धर्षिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।48।।

–पूर्णार्घ्य-नरेन्द्र छंद–

उग्र तपादिक से भगवन्, महती महावीर प्रभू तक।
चौबिस ऋद्धि सहित मुनियों के, नाममंत्र हैं सुखप्रद।।
शिवसुखदाता महर्षियों को, अर्घ चढ़ाऊँ रुचि से।
सर्व उपद्रव कष्ट दूर कर, सुख पाऊँ श्रुतवच से।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं उग्रतपः प्रभृति महतिमहावीरवर्द्धमानपर्यंतर्द्धिप्राप्तेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद–

अड़तालिस ऋद्धी के धारी, संपूर्ण महर्षी को वंदूँ।
संपूर्ण रोग सब शोक हरें, ऐसे गणधरगुरु अभिनंदूँ।।1।।
वरबुद्धि समृद्धी के दाता, रत्नत्रय वृद्धि करें ऋषिवर।
सब सिद्धि हेतु पूर्णार्घ्य करूँ, ये गणधर गुरु हैं भव भयहर।।2।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

।।जाप्य मंत्र।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

जयमाला

धुन– नागिन-मेरा मन डोले.....

जय जय गणधर, गुण ऋद्धीश्वर, तुम गायें तुम जयमाल को,
वसु द्रव्य सजाकर लाये हैं।
नग्न दिगम्बर वेष धार के, पिछी कमंडलु धारा।
मूलोत्तर गुण अगणित उत्तम, धार के स्वात्म संवारा।।प्रभू जी.।।

पर्वत पर चढ़, निज में अति दृढ़, नित ध्याते आतमराम को,
वसु द्रव्य सजाकर लाये हैं।।1।।
ग्रीष्म ऋतू में पर्वत ऊपर, वर्षा में तरु नीचे।
शीतकाल में नदी किनारे, आत्मध्यान में तिष्ठे।।प्रभू जी.।।
पद्मासन से, खड्गासन से, ध्यावें पहने गुणमाल को,
वसु द्रव्य सजाकर लाये हैं।।2।।
तीर्थंकर की दिव्यध्वनी सुन, द्वादशांग में गूंथें।
भव्य असंख्यों को संबोधें, चतुर्गती से छूटें।।प्रभू जी.।।
निज रागद्वेष, हरकर अशेष, नित चखते साम्यरसाल को,
वसु द्रव्य सजाकर लाये हैं।।3।।
सूरी के छत्तीस मूलगुण, उपाध्याय के पच्चिस।
साधू के अट्ठाइस मानें, तीनों में ये निश्चित।।प्रभू जी.।।
गुरु गणधर के, सब गुण चमकें, इनसे हैं मालामाल वो,
वसु द्रव्य सजाकर लाये हैं।।4।।
दर्शमोह का मूल नाशकर, क्षायिक सम्यग्दृष्टी।
छठे सातवें गुणस्थान में, करें धर्म की वृष्टी।।प्रभू जी.।।
श्रेणी पे चढ़े, चउ घाति हने, फिर पाते केवलज्ञान को,
वसु द्रव्य सजाकर लाये हैं।।5।।
मोक्ष मार्ग में विघ्न असंख्ये, किस विध मार्ग सरल हो।
गणधर गुरु की पूजा करते, सर्व विघ्न निष्फल हों।।प्रभू जी.।।
गुरु भक्ती से, सब पाप नशें, सब कार्य सिद्धि तत्काल हो,
वसु द्रव्य सजाकर लाये हैं।।6।।
बहुविध रोग शोक दुख दारिद, मानस ताप असंख्ये।
इष्टवियोग अनिष्ट योग के, आर्तध्यान दुखकंदे।।प्रभू जी.।।
गुरुवंदन से, अभिनंदन से, नश जाते दुख दुर्वार जो,
वसु द्रव्य सजाकर लाये हैं।।7।।

गणधर गुरु के सर्व ऋद्धियाँ, प्रगट हुईं श्रुत गायें।,
अन्य तपस्वी ऋषियों के भी, कतिपय ऋद्धि कहायें।।प्रभू जी.।।
रस त्याग करें, रस ऋद्धि वरें, ये करें स्वपर कल्याण को,
वसु द्रव्य सजाकर लाये हैं।।8।।
उग्र उग्र तप करके साधू, दीप्ततपो ऋद्धीयुत।
नहिं आहार करें फिर भी ये, काय दीप्ति वृद्धीयुत।। प्रभू जी.।।
इन चरण नमें, भव में न भ्रमें, पा लेते निज गुणमाल को,
वसु द्रव्य सजाकर लाये हैं।।9।।
वीरप्रभू के समवसरण में, गौतम ब्राह्मण आये।
तत्क्षण मुनिदीक्षा ले करके, गणधर प्रथम कहाये।। प्रभू जी.।।
जिन भक्ती से, वर मंत्र रचे, अड़तालिस ऋद्धीमान को,
वसु द्रव्य सजाकर लाये हैं।।10।।
हे भगवन् हम शरण में आये, एक याचना पूरो।
केवल 'ज्ञानमती' बस एकहि, ऋद्धी दे यम चूरो।।प्रभू जी.।।
कर जोड़ खड़े, तुम चरण पड़े, दे दो रत्नत्रय माल को,
वसु द्रव्य सजाकर लाये हैं।।11।।

–दोहा–

अड़तालिस गणधर वलय, मंत्र नमूँ तिहुंकाल।
श्री गणेशगुरुदेव को, नमूँ नमूँ नतभाल।।12।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीताछंद–

जो भव्यजन गुरुभक्ति से, ''गणधरवलय'' पूजा करें।
सब रोग शोक दरिद्र संकट, मानसिक पीड़ा हरें।।
दीर्घायु स्वास्थ्य सुकीर्ति वैभव, सौख्य संपति विस्तरें।
रवि ''ज्ञानमति'' के उदय से जन, मन कमल विकसित करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

गणधरवलयविधान प्रशस्ति

श्रीवीरप्रभू के सन्निध में, जिनने स्वधर्म को प्राप्त किया।
ऐसे श्रीगौतम गणधर ने, ऋद्धी मंत्रों को बना दिया।।
अड़तालिस गणधरवलय मंत्र, ये मंगल मंत्र कहाते हैं।
इनकी पूजा भक्ती करते, सब विघ्न स्वयं नश जाते हैं।।1।।

इस वीर प्रभू के शासन में, श्रीगौतम आदि गणेश हुये।
श्रीकुंदकुंद आचार्यदेव, इस युग में श्रेष्ठ मुनीश हुये।।
इस कुंदकुंद आम्नाय में शारद, गच्छ बलात्कारगण उत्तम।
चारित्र चक्रवर्ती गुरुवर, श्री शांतिसागराचार्य प्रथम।।2।।

श्रीवीरसागराचार्यवर्य, इनके ही पट्टाधीश मान्य।
ये मुझे आर्यिकाव्रत देकर, अन्वर्थ 'ज्ञानमती' दिया नाम।।
श्री सरस्वती माँ का प्रसाद, मुझको जो सम्यग्बुद्धि मिली।
श्रुतदेवी की सेवा करते, मन में भक्ती की कली खिली।।3।।

इन्द्रध्वज कल्पद्रुम विधान, जन जन के मन को भाए हैं।
जन अष्टसहस्त्री की भाषा, टीकादिक से हरषाए हैं।।
वीराब्द पचीस शतक उनीस, हस्तिनापुर पौषशुक्ल पूनम।
गणिनी मैंने यह पूर्ण किया, श्रीगणधरवलय विधानोत्तम।।4।।

भाक्तिक जन इस उत्तम विधान, को करके रोग शोक नाशें।
धन धान्य वृद्धि उत्तम कीर्ती, पा निज में ज्ञानज्योति भासें।।
जब तक जग में जिनवर शासन, जिनधर्म अहिंसामय जब तक।
तब तक इस जग में यह विधान, भव्यों को होवे शांतीप्रद।।5।।

।।इति गणधरवलयविधान प्रशस्तिः।।

आरती

तर्ज–चाँद मेरे आजा रे.....

आरती गणधर की कर लो-2
ऋद्धि समन्वित, सबका करें हित, निज में सदा रत रहते।।टेक.।।

मुनि व्रत धारण कर जो नर, उग्रोग्र तपस्या करते।
तप के ही बल पर वे मुनि, नाना ऋद्धी को वरते।।
आरती गणधर की कर लो-2।।1।।।

श्री विष्णु कुमार मुनी को, हुई प्राप्त विक्रिया ऋद्धी।
उपसर्ग दूर कर मुनि का, हो गई सफल उन ऋद्धी ।।
आरती गणधर की कर लो-2।।2।।

अक्षीण महानस ऋद्धी, युत मुनि आहार जहाँ हो।
उनकी ऋद्धी से उस दिन, अक्षय भंडार वहाँ हो।।
आरती गणधर की कर लो-2।।3।।

चारणऋद्धी युत ऋषिगण, आकाशगमन करते हैं।
ढाईद्वीपों के अंदर, विचरण करते रहते हैं।।
आरती गणधर की कर लो-2 ।।4।।

कलिकाल में कोई मुनिवर, नहिं ऋद्धि प्राप्त करते हैं।
''चंदनामती'' फिर भी वे, शक्तीयुत तप करते हैं।।
आरती गणधर की कर लो-2 ।।5।।

भजन

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–माई रे माई.....

ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव, मिलकर सभी मनाएं।
आओ इस भारत वसुधा पर, अगणित दीप जलाएं।।
प्रभू की जय जय जय, प्रभु की जय जय जय जय।।

कोड़ा-कोड़ी वर्ष पूर्व, तिथि माघ कृष्ण चौदश थी।
अष्टापद से मोक्ष पधारे, ऋषभदेव जिनवर जी।।
तब स्वर्गों से इन्द्रों ने आ.....
तब स्वर्गों से इन्द्रों ने आ, दीप असंख्या जलाएं।
आओ इस भारत वसुधा पर, अगणित दीप जलाएं।।
प्रभू की जय जय जय, प्रभु की जय जय जय जय।।1।।

ऋषभदेव से महावीर तक, हैं चौबिस तीर्थंकर।
इन सबका उपदेश एक ही, धर्म अहिंसा हितकर।।
जिओ और जीने दो सबको.....
जिओ और जीने दो सबको, यह सन्देश सुनाएं।
आओ इस भारत वसुधा पर, अगणित दीप जलाएं।।
प्रभू की जय जय जय, प्रभु की जय जय जय जय।।2।।

गणिनी माता ज्ञानमती की, मिली प्रेरणा जग को ।
ऋषभदेव निर्वाणोत्सव में, सब जनता जागृत हो।।
इसीलिए ''चंदनामती''.....
इसीलिए ''चंदनामती'', सब उत्सव खूब मनाएं।
आओ इस भारत वसुधा पर, अगणित दीप जलाएं।।
प्रभू की जय जय जय, प्रभु की जय जय जय जय।।3।।

भजन

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–मिलो न तुम तो.....

अष्टापद से मोक्ष पधारे, अवध के राजदुलारे,
महोत्सव आ गया है।।

जन्म लेने वाले प्राणी, निश्चित ही मृत्यु इक दिन पाते हैं। हो.....
उनमें से बिरले प्राणी, मोक्षगामी तीर्थंकर कहलाते हैं।।हो.....
वे ही प्रथम जिनेश्वर प्यारे, ऋषभदेव अवतारे,
महोत्सव आ गया है।।1।।

नाभिराय मरूदेवी के, पुत्र आदिनाथ जी कहलाए थे।हो.....
कर्मभूमि की जनता ने, जीने के सूत्र उनसे पाए थे।।हो.....
चैत्रवदी नवमी अवतारे, जन जन के रखवारे,
महोत्सव आ गया है।।2।।

राजसुख को त्याग दीक्षा, लेके केवलज्ञान प्राप्त कर लिया।हो.....
कैलाशगिरि पर जाकर, कर्मनाश मोक्ष प्राप्त कर लिया।।हो.....
तब इन्द्रों ने दीप जलाए, दीपावली मनाएं,
महोत्सव आ गया है।।3।।

निर्वाण उत्सव उनका, मिलकर के हम सभी मनाएंगे।हो.....
''चंदनामती'' तीर्थंकर, ऋषभदेव की महिमा सब गाएंगे।।हो.....
गूंजे प्रभु के जयजयकारे ऐसा सुयश उचारें,
महोत्सव आ गया है।।4।।

भजन

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज-सज धज कर.....

तेरी चंदन सी रज में, इक उपवन खिलाया है।
कुण्डलपुर के महावीरा, तेरा महल बनाया है।।

जन्मे जहाँ खेले जहाँ, त्रिशला माँ के नन्दन।
उस कुण्डलपुर की माटी का, सचमुच कण-कण चन्दन।।
चन्दन सी उस माटी को अब, सिर पर लगाया है।
कुण्डलपुर के महावीरा, तेरा महल बनाया है।।1।।

सोने का नंद्यावर्त महल, सिद्धारथ जी का था।
मणियों के पलंग पर त्रिशला ने, सपनों को देखा था।।
उन सपनों को सच्चे करके, फिर से दिखाया है।
कुण्डलपुर के महावीरा, तेरा महल बनाया है।।2।।

प्राचीन इक मंदिर प्रभू का, कुण्डलपुर में है।
नालंदा के नजदीक ''चन्दना'', दर्शन मिलते हैं।।
भावना सभी भक्तों की अब, प्रभु तक पहुँचाया है।
कुण्डलपुर के महावीरा, तेरा महल बनाया है।।3।।

गणधरवलय विधान का नक्शा

चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों की नामावली

महानुभावों,

अपने नगर के जिनमंदिरों में चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों के नाम निम्नानुसार लिखवाएं अथवा शिलापट्ट लगवाएं एवं इन तीर्थों की यात्रा करके पुण्यलाभ प्राप्त करें।

प्रेरणा-गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी

तीर्थंकर जन्मभूमि	तीर्थंकरों के नाम
1. अयोध्या (फैजाबाद-उ.प्र.)	–श्री ऋषभदेव भगवान
	–श्री अजितनाथ भगवान
	–श्री अभिनंदननाथ भगवान
	–श्री सुमतिनाथ भगवान
	–श्री अनंतनाथ भगवान
2. श्रावस्ती (बहराइच-उ.प्र.)	–श्री संभवनाथ भगवान
3. कौशाम्बी (उ.प्र.)	–श्री पद्मप्रभु भगवान
4. वाराणसी (उ.प्र.)	–श्री सुपार्श्वनाथ भगवान
	–श्री पार्श्वनाथ भगवान
5. चन्द्रपुरी (वाराणसी) उ.प्र.	–श्री चन्द्रप्रभु भगवान
6. काकन्दी (देवरिया नि.-गोरखपुर) उ.प्र.	–श्री पुष्पदंतनाथ भगवान
7. भद्रिकापुरी, इटखोरी (चतरा-झारखंड)	–श्री शीतलनाथ भगवान
8. सिंहपुरी (सारनाथ) उ.प्र.	–श्री श्रेयांसनाथ भगवान
9. चम्पापुरी (भागलपुर-बिहार)	–श्री वासुपूज्यनाथ भगवान
10. कम्पिलपुरी (फर्रूक्खाबाद-उ.प्र.)	–श्री विमलनाथ भगवान
11. रत्नपुरी (फैजाबाद-उ.प्र.)	–श्री धर्मनाथ भगवान
12. हस्तिनापुर (मेरठ-उ.प्र.)	–श्री शांतिनाथ भगवान
	–श्री कुन्थुनाथ भगवान

	–श्री अरनाथ भगवान
13. मिथिलापुरी	–श्री मल्लिनाथ भगवान
	–श्री नमिनाथ भगवान
14. राजगृही (नालंदा-बिहार)	–श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान
15. शौरीपुर (बटेश्वर-उ.प्र.)	–श्री नेमिनाथ भगवान
16. कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार)	–श्री महावीर भगवान

विशेष-ज्ञातव्य है कि पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से स्थापित अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी द्वारा तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों के विकास का क्रम सफलतापूर्वक जारी है। इस क्रम में हस्तिनापुर, अयोध्या, कुण्डलपुर (नालंदा), राजगृही, सिंहपुरी (सारनाथ) में सुन्दर निर्माण एवं विकास के कार्य सम्पन्न हुए हैं, जिससे कि प्राचीन तीर्थभूमियाँ प्रकाश में आई हैं तथा उनका राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार हुआ है। इसी क्रम में वर्तमान में भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकंदी का भी निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। आप भी अपने आसपास के क्षेत्र में स्थित तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास हेतु समाज में जागरुकता पैदा करें एवं संगठित होकर उन प्राचीन तीर्थभूमियों का जीर्णोद्धार करें। इस कार्य में हम सदैव आपके साथ हैं।

–निवेदक–

अखिल भारतवर्षीय
दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी

–अध्यक्ष–

कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

–प्रधान कार्यालय–

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.-01233-280184, 280236